प्रति: क्लास 18-2-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। कि आत्मा कितनी छोटी है। बहुत छोटी है। और उस छोटी सी आत्मा से कितना सबबड़ा देखने में आता है। छोटी आत्मा अलग हो जाती है तो फिर कुछ भी नहीं देख सकते। आत्मा के ऊपर विचार किया जाता है इतनी छोटी बिन्दी, क्या2 काम करती है। मैगनीफाईग्लास होती है उन से बहुत छोटे2 हीरों को देखा जाता है किकोई दाग तो नहीं है। बहुत छोटे हीरे होते हैं। तो आत्मा भी कितनी छोटी है। कैसे कैसा मैगनीफाईग्लास है जिससे देखती है। रहती कहां है। क्या कनेक्शन है इन आखों से। कितना बड़ा आसमान धरती आद देखने में आती है। बिन्दी निकल जाने से कुछ भी नहीं रहता। जैसे बिन्दी बाप है वैसे बिन्दी आत्मा है। इतनी छोटी सी आत्मा प्युर इमप्युर बनती है यह बहुत ही सोच करने की महीन बातें हैं। दूसरा कोई नहीं जानते कि आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है। इतनी छोटी आत्मा शरीर में रह क्या क्या बनाती है। क्या2 देखती है। उस आत्मा अ में सारा पाट भरा हुआ 84 जन्मों का। कैसे वह काम करती है वन्डर है ना। इतनी छोटी आत्मा 84 जन्म लेती है। एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। हम छोटी सी बिन्दी में 84 जन्मों का पार्ट नूंधा हुआ है। जैसे समझो नेहरु भरा अथवा क्राईस्ट भरा। आत्मा निकल गई तो शरीर मर गया। कितना बड़ा शरीर है। आत्मा कितनी पिचकरी है। यह भी बाबा ने बहुत बार समझाया है मनुष्यों को कैसे पता पड़े कि सृष्टि का चक्र 5000 वर्ष बाद फिरता है। अपनी कोई अखबार तो है नहीं। सिर्फ मैगजीन मासिक निकलती है। इस में भी 5-7 का मुख्य नाम डाल दे फलाने2 ने जिस समय छोड़ा फिर हर 5000 वर्ष बाद ऐसे ही शरीर छोड़ेंगे। हर 5000 वर्ष बाद वहपार्ट रिपीट करते हैं। फलाना भरा यह कोई नई बात नहीं। उनकी आत्मा ने एकशरीर छोड़ दूसरा लिया। 5000 वर्ष पहले भी इस नाम-रूप को इसी समय छोड़ा था।

आत्मा जानती है हम एक शरीर छोड़ फिर जाकर दूसरे शरीर में प्रवेश करती है। अभी तुम शिवजयन्ति मनाते हो, दिखाते हो 5000 वर्षपहले भी शिवजयन्ति मनाई थी। हर 5000वर्ष बाद शिवजयन्ति जो हीरे तुल्य है मनाते आते हैं। यह बड़ी महीन बातें हैं। विचार सागर मथन कर यह सब बातें बुधि अन्दर लानी होती है। फिर जो हम औरों को समझा सकें। यह त्योहार आती है। तुम कहेंगे नई बात नहीं। हिस्ट्री रिपीट होती रहती है। हर 5000वर्ष बाद। जो भी पार्टधारी हैं हर 5000 वर्ष बाद वही शरीर लेंगे। एकनाम-रूप देशकाल छोड़ दूसरा लेते हैं। वह भी फिर हर 5000 वर्ष बाद रिपीट करेंगे। इस पर विचार सागर मथन करना चाहिए।

युक्ति से लिखें जो मनुष्य वन्डर खावें। हर 5000 वर्ष बाद यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जरूरी रिपीट होती है। बच्चों से पूछते हैं आगे कब मिले हो? इतनी छोटी सी आत्मा से पूछता होता है। तुम इस नाम-रूप आगे कब मिले थे? आत्मा ने सुना ना। झट कहते हैं हां बाबा आप से कल्प पहले मिले थे। सारा ड्रामा का पाट बुधि में है। वह होते हैं हद के ड्रामा और एक्टर्स। यह हैं बेहद का ड्रामा। यह ड्रामा तो बड़ा ही एक्युरेट है। इसमें जरा भी फर्क नहीं पड़ सकता। वह होते हैं हद के। मशीन पर चलते हैं। दो चार रील भी होते हैं जो फिरते हैं। यह तो अनादी अविनाशी ड्रामा एक ही है। तुम बच्चे अभी समझते हो आत्मा कितनी छोटी है। आत्मा एक पार्ट बजाये फिर दूसरा बजाती है। 84 जन्मों का कितना फिल्म रील होगा। यह कुदरती है ना। कोई की बुधि में बैठेगा। है तो रिकार्ड फिशल। यह बड़ा ही वन्डर फुल है। किसको समझावें तो माथा चकरी खावे। तुम आत्मा कैसे 84 जन्म लेते हो। 4लाख हो न सके। 84 का ही चक्र है। उनकी भी पहचान कैसे दी जाये। अखबार वो वाले तो न भी डालें। पैसे से छालेंगे। मैगजीन में भी घड़ी2 डाल सकते हैं। वन्डर है ना। समझो कोई खेल है। अभी भरा फिर 5000 वर्ष बाद यहहमारे सामने ऐसे ही होगा। हम इस संगम समय की ही बातें करते हैं। सतयुग में तो ऐसी बातें होंगी ही नहीं। न कलियुग में होंगे।

अब आद जो भी है सभी के लिए कहेंगे फिर 5000 वर्ष बाद यह देखो। फर्क पड़ नहीं सकता। ड्रामा नूंध है? सतयुग में जनावर आद भी बड़े फर्स्ट क्लास होते हैं। खुबसुरत होते हैं। तो यह सारी वर्ल्ड भी नूंध है।

हिस्ट्री-जागराफी फिर रिपीट होंगी। जैसे ड्रामा की शुटींग होती है मक्खी उड़ गई तो वह भी निकल आवेंगे। फिर वही रिपीट होंगे। अभी अपन इन छोटी2 बातो को तो ख़याल नहीं करते हैं। पहले तो बाप खुद कहते हैं हम कल्प2 सुख-संगम युगे इस ~~[illegible]~~ प्राप्तशाली रथ पर आता हूं। आत्मा ने कहा ना। कैसे इसमें आते हैं कितनी छोटी बिन्दी है। उनको फिर ज्ञान का सागर कहते हैं। यह बातें तुम बच्चों में जो सयाने समझू है वह समझ सकते हैं। बाप खुद कहते हैं मैं हर 5000 वर्ष बाद आता हूं। कितनी यह वैल्युएबुल नालेज है। बाप के पास यह एक्युरेट नालेज है। जो हम बच्चों को देते रहते हैं। तुम से कोई पूछे तुम झट कहेंगे सतयुग की आयु 1250 वर्ष है। एक एक जन्म में 150 वर्ष की आयु होती है। कितना पार्ट बजता है। बुद्धि में यह टोटल सारा चक्र फिरता रहता है। हम ऐसे 84 जन्म लेते हैं। सारी सृष्टि इस चक्र में फिरती रहती है। यह अनादी अविनाशी ड्रामा है। बनी बनाई ..... इन में नई एडीशन, एडलट्रेशन आद नहीं हो सकती। गायन भी है चिन्ता ~~[illegible]~~ ताकी कीजिये जो अनहोनी होये। जो कुछ होता है ड्रामा में नूंध है। इसको साक्षी हो देखना पड़ता है। उस नाटक में कोई ऐसा पार्ट होता है तो ~~[illegible]~~ जो कमजोर दिल वाले होते हैं वह रोने लग पड़ते हैं। ~~[illegible]~~ है तो नाटक ना। यह तो रियल है। इसमें हरेक आत्मा अपने 84 जन्मों का पार्ट बजाती है। ड्रामा कब बन्द होना नहीं है। इसमें रोने रुसने की कोई बात नहीं। कोई नई बात थोड़े ही है। अफसोस उनको होता है जो ड्रामा के आदि मध्य अन्त को रियलाईज़ नहीं करते हैं। यह भी तुम समझते हो इस समय हम ज्ञान लेजो पद पाते हैं चक्र लगाये फिर यही बनेंगे। यह बड़ी आश्चर्यवत बातें विचार सागर मंथन करने की ~~[illegible]~~ हैं। कोई भी मनुष्य इन बातों को नहीं जानते हैं। ऋषि-मुनि भी कहते थे हम रचता और रचनायें आदि मध्य अन्त को नहीं जानते हैं। उनको क्या पता रचता इतनी छोटी बिन्दी है। वही नई सृष्टि का रचता है। तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। ज्ञान का सागर है, यह बातें अभी तुम बच्चे ही समझते हो। तुम थोड़े ही कहेंगे हम नहीं जानते हैं। तुमको बाप इस समय समझाते हैं। तुमको कोई बात की अफसोस करने की दरकार नहीं। सदैव ही हर्षित रहना है। उस ड्रामा के फिल्म तो चलते2 घिस जायेंगे। पुरानी होगा। फिर बदली करेंगे। पुरानी को फ्लास कर देते हैं। यह अविनाशी बेहद का ड्रामा है। ऐसी2 बातों पर विचार पक्का कर लेना चाहिए। हम बाप के श्रीमत पर ही चलने से पतित से पावन बनते हैं। और कोई बात ही नहीं जो हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनें। आत्मा सतोप्रधान थी पार्ट बजाते2 ~~[illegible]~~ तमोप्रधान बन गई है। फिर सतोप्रधान बनना है। न आत्मा विनाश को पा सकती न पार्ट ही विनाश हो पा सकते हैं। ऐसी2 बातों पर कोई का भी विचार नहीं चलाता। मनुष्य सुन कर बन्डर जायेंगे। वह तो सिर्फ भक्ति मार्ग के शास्त्र ही पढ़ते हैं। रामायण भगवद गीता आद सब ही हैं। कल्प के नई छपती होंगी तो उन में एड करते होंगे। इसमें तो विचार ~~[illegible]~~ सागर मंथन करना होता है।

का बैठ समझाते हैं। ज्यों का त्यों हम धारण कर लेवें तो अच्छा ही पद पा सकते हैं। सभी एक जैसा ~~[illegible]~~ नहीं कर सकते हैं। कोई तो बड़ी महीनता से समझाते हैं। आजकल जेल में भी जाते हैं भाषण करने। वेश्याओं पास भी जाते हैं। गूंगे, बहरों बहरों के पास भी जायेंगे। उन्हों का भी हक है ना। ईशारों से समझ सकते हैं। आत्मा को समझने वाली है अन्दर है ना। चित्र सामने रख दो पढ़ तो सकेगा ना। आत्मा में बुद्धि तो है ना। भल=अंधे, लूले, लंगड़े हो तभी भी कोई न कोई प्रकार से समझ सकते हैं। चित्र तो हैं ही। अंधों को कान तो होंगे ही। तुम्हारा सीढ़ी का चित्र देखो कितना अच्छा है। यह नालेज ऐसी है जो तुम कोई को भी समझा कर स्वर्ग में जाने लायक बना सकते हो। आत्मा बाप से वर्सा ले सकती है। कल के आरगन्स डिफीक्टेड हैं। वहां तो ऐसे होते ही हैं। वहां तो आत्मा और शरीर दोनो ही कंचन होती है। नई चीज़ सो पुरानी जरूर होती है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे सेकण्ड से। कुछ न कुछ फर्क जरूर पड़ता है। ऐसे ड्रामा को ज्यों का त्यों साक्षी हो देखना है। यह नालेज तुमको अभी ही मिलती है। फिर कब नहीं। आगे यह नालेज थोड़े ही थी।

यह अनादी बना बनाया ड्रामा है। यह अच्छी रीत समझ और धारणकर किसको समझाना है। तुम ब्राह्मण ही इस ज्ञान को जानते हो। यह तो चोपचीनी तुमको मिलती है। अच्छी ते अच्छी चीज़ की महिमा तो की जाती है ना। बेहद का बाप तुमको सब राज समझाते हैं। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है नई दुनिया कैसे स्थापन होती है। फिर है यह राज्य कैसे होगा। तुम्हारे में भी नम्बरवार जानते हैं। जो जानते हैं वह दूसरों को भी समझाते हैं। बहुत खुशी में रहते हैं। कोई को तो पाई भी खुशी नहीं रहती। सभी को अपना2 पार्ट मिला हुआ है। जिनको बुधि में बैठा होगा विचार सागर मथन करते होंगे तो दूसरों को भी समझावेंगे। तुम्हारी यह पढ़ाई जिससे तुम यह बनते हो। तुम कोई को भी समझा सकते हो कि अपनको आत्मा समझो। आत्मा ही परमात्मा को याद करती है। आत्मायें सब ब्रदर्स हैं। यह कहावत है गाड इज वन। बाकी इतने जो मनुष्य हैं सब में आत्मा है ना। सभी आत्माओं का पारलौकिक बाप एक ही है। जो एक्युरेट बुधि होंगे उनको कबभी कोई पिराये न सके। कच्चे को तो झट पिराये देंगे। सर्वव्यापी के ज्ञान पर कितना डिबेट करते हैं। वह ते तो अपनी बातों में बहुत पक्के हो गये हैं ना। हो सकता है हमारी इस धर्म का नहीं, धर्म भ्रष्ट-कर्म भ्रष्ट है तो फिर उन्हों को देवता कैसे कहें। इसलिए कहा जाता है आदी सनातन देवी-देवता धर्म प्रायः लोप है। तुम बच्चों को यह अभी पता है आदी सनातन देवी देवता हमारा धर्म था। पवित्र प्रवृति मार्ग था। अभी तो अपवित्र हो गया है। जो पहले पूज्य थे वही अब पुजारी बने हैं। बहुत पाईन्ट कंठ होंगी तो समझाते रहेंगे। बाप भी समझाते रहते हैं। तुम औरों को भी समझाते हो। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। सिवाय तुम्हारे और कोई नहीं जानते हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार जानते हैं। अभी बाबा के घड़ी2 पाईन्ट रिपीट करनी पड़ती है। क्योंकि नये बहुत आते हैं। शुरू में क्या हुआ कैसे प्रवेश हुई तुम से पूछेंगे। फिर रिपीट करना पड़ेगा। तुम बहुत बिज़ी रहेंगे सर्विस में। चित्रों पर भी तुम समझाते हो। कई बच्चे ओरली भी समझाते हैं। बहुत हैं जो पुराने हैं। यज्ञ की हिस्ट्री किसको भी बैठ सुनावेंगे। परन्तु ज्ञान की पाईन्ट बुधि में बैठ न सके। किसको समझा न सके। ज्ञान की धारणा सब की एकरस हो न सके। इस गुण चाहिए। याद चाहिए, धारणा बड़ी अच्छी चाहिए तब ही आत्मा पवित्र बने और खुशी भी आये। मूल बात है ही पवित्रता की। येगबल बिगर कोई सतोप्रधान बनेगा नहीं। सतोप्रधान बनने लिए बाप को याद करना पड़े। कई तो अपने ही धंधे आदि में फंसे रहते हैं। कुछ भी पुरुषार्थ नहीं करते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। कल्प पहले जिन्हों ने जो पुरुषार्थ किया है करते रहते हैं। नई2 पाईन्ट भी बाप समझाते रहते हैं। पिछाड़ी में तुमको भाई2 से रहना है। नंगे आये नंगे जाना है। ऐसा न हो पिछाड़ी में कोई याद आये। अभी तो कोई भी कर्मातीत अवस्था हो न सके। वापस कोई जा न सके। जब तक विनाश न हो स्वर्ग में कैसे जावेंगे। जरूर या तो सूक्ष्मवतन में या हां ही जन्म लेंगे। बाकी जो रहे खड़े हुये होंगे उनका पुरुषार्थ करेंगे। बाकी वह भी जब बड़े हो तो। यह भी ड्रामा में सारी नूंध है। तुम्हारी एकरस अवस्था की पिछाड़ी में होगी। रेखे भी नहीं लिखनेसे भी याद हो सकता है। फिर लाईब्रेरी आदि में इतने किताब आदि क्यों होते। डाक्टर लोग वकील लोग बहुत किताब रख रखते हैं। पढ़ाई करते रहते हैं। वह मनुष्य मनुष्य के वकील होते हैं। तुम आत्मायें आत्माओं के वकील बनते हो। आत्माओं को पढ़ाते हो। वह हैं जिस्मानी पढ़ाई। यह है रूहानी पढ़ाई। इस रुहानी पढ़ाई से2। जन्म कब भूल-चूक नहीं है। माया के राज्य में तो भूल चूक बहुत होती रहती है। जिस कारण ही सहन करना पड़ता है। जो पूरा न पढ़ेंगे वह कर्मातीत को नहीं पावेंगे। फिर सहन करना पड़ेगा फिर पद भी कम हो जावेगा। विचार सागर मथन कर औरों को सुनाते रहेंगे तब चिन्तन चलेगा। बच्चे जानते हैं कल्प पहले भी बाप आया था और उनकी शिवजयन्ति मनाई थी। लड़ाई आदि की तो बात ही नहीं। वह सब हैं शास्त्रों की झूठी बातें। यह पढ़ाई है। आमदनी में खुशी होती है ना। जिनको लाख होती है उनको खुशी जरूर होगी। कोई लखपति, कोई करोड़पति अर्थात थोड़े पैसे वाले। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को बापदादा का याद प्यार गुडमोर्निंग और नमस्ते।